मसला कैसे हल होगा ? आप हमें बदमाश समझेंगे, हम आपको बदमाश समझेंगे और फिर सुलह की बात करेंगे तो कैसे चलेगी ? फिर तो कोल्ड वार ही चलेगा। मैंने उसके लिए एक नया लब्ज निकाला है। मैं उसे 'हॉट पीस' कहता हूँ।

दीन और मजहब

मैंने यहाँ कदम रखते ही कहा था कि यहाँका मसला सियासी या मजहबी ढंग से हल नहीं होगा, रूहानियत से ही हल होगा। रूहानियत को मजहब से अलग करना पड़ता है। क्योंकि मजहब का एक ढाँचा बना है। रूहानियत ऐसी चीज है, जो ढाँचे में नहीं आ सकती। ढाँचा अच्छे मक़सद से बनाया हो तो भी उससे उलझनें पैदा होती हैं। मजहब के साथ छोटी-छोटी चीजें जुड़ी रहती हैं, जिससे मनुष्य जकड़ा जाता है। उसकी वजह से उसकी बुद्धि आजादी से सोच नहीं पाती। अरबी में जो "दीन" लफ्ज है, उसे मैं पसन्द करूँगा, "मजहब" लफ्ज को नहीं पसन्द करूँगा। कुरान में कहा है 'दीनुल हक'। दीन एक ही हो सकता है, मजहब कई हो सकते हैं। दीन याने हक। कुरानशरीफ में "उम्मुल किताब" की जो बात है, वह रूहानियत है। बाकी किताब में इन्टरप्रिटेशन के झगड़े होते हैं, उन सबके मानी क्या है, अल्लाह ही जानता है। मैंने कहा था कि रूहानियत से मॉरल्स को, अखलाक को भी हम अलग करते हैं। इसलिए कि मॉरल्स भी रिलेटिव्ह बने हुए हैं। कभी-कभी कहा जाता है कि अमन तशद्दुद के बचाव के लिए सत्य को छोड़ो। कभी कहा जाता है कि सत्य के बचाव के लिए अमन तशद्दुद को छोड़ो। इस तरह आजकल इतना रिलेटिव ईथिक्स चलता है।

इस तरह एक बाजू सच्चाई और दूसरी बाजू मुहब्बत को खड़ा किया जाता है। आज का जो ईथिक्स है, वह हैमलेट है। 'टु डु और नाट टु डु'। इस तरह आज का ईथिक्स सोचता है। आज का ईथिक्स क्वेश्चन-मार्क है, फुलस्टॉप नहीं। हमने रूहानियत को इन्टेलेक्च्यूअल से भी अलग माना है; क्योंकि उसमें तो पचासों झगड़े हैं। इसीलिए रिलीजस, मारल और इन्टेलेक्च्यूअल इन तीनों को छोड़कर स्पिरिच्यूअल लफ्ज को ही इस्तेमाल करना पड़ता है।

प्रश्न : गाँव का कुनबा बनाने का कश्मीर के मसले के साथ क्या ताल्लुक है ?

गाँव का कुनबा और दुनिया की सरकार

विनोबाजी : गाँव-गाँव का एक कुनबा बने और उन्हें जोड़नेवाली कड़ी कश्मीर हो। आइडियालॉजिकली कश्मीर एक हो, ऐसा मानने में बड़ा खतरा है। हम तो कहते हैं कि इधर गाँव का कुनबा रहेगा और दुनिया की सरकार। सिर्फ कश्मीर एक बने, ऐसा कहने में ही खतरा नहीं है, बल्कि एशियाटिक फेडरेशन बने, यह कहने में भी खतरा है। इसलिए हमें वर्ल्ड फेडरेशन की बात करनी चाहिए। आइडियालॉजीकली बोलना हो तो दुनिया एक बने, यह कहना होगा और प्रैक्टिकली बोलना हो तो गाँव का कुनबा बने, यह कहना होगा। जो प्रेक्टिकल सवाल है, उसे हल किया जा सकता है।

प्रश्न : क्या इसमें वक्त नहीं लगेगा ?

पैगम्बरों को अनपढ़ चेले मिले

विनोबाजी : क्या वक्त लगेगा ? आपके सामने साइन्स की डेमाक्लीस स्पीड खड़ी है। मैं जो कहता हूँ, वह अगर सही बात है तो हम लोगों को यह क्यों नहीं समझा सके हैं और अगर यह गलत बात है तो वह होनी ही नहीं चाहिए। मैं अपने तजुर्बे से कहता हूँ कि अनपढ़ लोगों को हम अपनी बात आसानी से समझा सकते हैं। लेकिन पढ़े-लिखे लोगों को समझाने में मुश्किल मालूम होती है। क्योंकि अनपढ़ लोग बुनियादी इन्सानियत को पकड़ लेते हैं। उनके दिमाग सुलझे हुए हैं। इसलिए बड़े-बड़े पैगम्बरों को कौन शिष्य मिले, यह जरा देखो। मैं मानता हूँ कि छोटे-छोटे देहातवाले मेरी बात जल्दी समझेंगे। श्रीनगर आखिरी किला होगा।

साइन्स ऐक्शन, रुहानियत डायरेक्शन

प्रश्न : क्या रूहानियत और साइन्स का जोड़ है ?

विनोबाजी : बहुत जोड़ है। एक है डाइरेक्शन और दूसरा ऐक्शन, मोटिव फोर्स। आग की खोज के बाद आपके हाथ में एक ताकत आयी। अब आप आग से चूल्हा सुलगा सकते हैं और घर भी जला सकते हैं। इसलिए डाइरेक्शन देना रूहानियत का काम है। क्लोरोफार्म की खोज से दुनिया को कितनी राहत मिली ! इस तरह साइन्स को रूहानियत का डाइरेक्शन मिले तो दुनिया में बहिश्त आयेगा। साइन्स नॉनमॉरल है। उसकी रूहानियत के साथ कोई मुखालिफत नहीं है।

प्रश्न : आप गाँव को खुदकफील (स्वावलम्बी) बनाना चाहते हैं, लेकिन गाँव में कोई पढ़ा-लिखा न हो तो बच्चों को कौन पढ़ायेगा ?

परस्परावलम्बी स्वतन्त्रता

विनोबाजी : एक गाँव में पढ़ा-लिखा न हो तो नजदीकवाले गाँव से किसी पढ़े-लिखे शख्स को बुलाकर वहाँ बसाया जा सकता है। हमारा स्वावलम्बन का जो खयाल है, वह चीनी दार्शनिक लाओत्से जैसा नहीं है। हम चाहते हैं कि बैनुल अकवामी व्यवहार चलते रहें, लेकिन गाँव में जो बुनियादी चीजें बन सकती हैं, वे गाँव में ही बनें। बाहर से चीजें जरूर आयें, लेकिन हमारा बोझ दूसरों पर कम-से-कम पड़े। हम यह नहीं कहते कि हम दुनिया को मदद न करें या दुनिया से मदद न लें। बल्कि इतना ही कहते हैं कि बुनियादी जरूरियातें उसी जगह पैदा करने की कोशिश हो। नहीं पैदा होती तो पड़ोस से लायी जायँ। इस तरह हमारा इन्टर-डिपेन्डेन्ट इन्डिपेन्डेन्स (परस्परावलंबी स्वतन्त्रता) है। इसमें विसंगति आ सकती है। लेकिन यह दो अलफाज बताकर ही हमारा विचार बताया जा सकता है। ● ● ●

१. अनाज की कमी कैसे दूर होगी ?
गुलमर्ग १६ जुलाई '५९ पृष्ठ ७७९

२. नफरत का मुकाबला प्यार से
गुलमर्ग १७ जुलाई '५९ ,, ७८१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in